आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को परमधाम से हटाकर बेसुधी के खेल में लगा दिया। अब स्वयं जोर-जोर से पुकार रहे हैं, परन्तु आत्माओं को होश नहीं आ रहा है।

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह बातें बड़े गहरे रहस्य से भरी हैं जब तुमको इश्क मिलेगा तब तुम्हें इसकी सुध आएगी।

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के।। ८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रूहों की इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से रद बदल (बातचीत) हुई थी। अब बिना इश्क के परमधाम में कैसे जा सकते हैं?

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६०५ ॥

सूरत हक इस्क के मगज का बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अर्स की, हक बका वतन।
रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन।। १ ।।

हाय री परमधाम की आत्माओ! तुम श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की बातों को क्यों नहीं सुनते हो? रूहअल्लाह श्यामा महारानीजी ने आकर हकीकत जाहिर कर दी है जो आज दिन तक किसी ने नहीं सुनी थी।

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी की नींद हंसी के वास्ते दी है। हाय री रूहो! तुम्हें यह सब्द सुनकर दिल को चोट नहीं लगती।

ए साहेब हांसी करे, अर्स की अरवाहों सों।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदेमों।। ३ ।।

यह श्री राजजी महाराज परमधाम की रूहों से हंसी कर रहे हैं। हाय-हाय तुम्हारे दिल इतने पत्थर हो गए कि विचार भी नहीं आता।

ए साहेब किने न देखिया, न किन सुनिया कान।
ढूंढ़ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज को आज दिन तक न किसी ने देखा न किसी ने सुना। ढूंढ-ढूंढकर त्रिगुन थक गए, परन्तु वह भी पारब्रह्म को प्राप्त नहीं कर पाए।

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के।
सो नूर नूरजमाल के, मुजरे आवत इत ए।। ५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वही अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन करने यहां (परमधाम) में आते हैं।

Nijanand App

जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार।
साहेब अर्स-अजीम के, करने उत दीदार।। ६ ।।

जिस अक्षर ब्रह्म को आज दिन तक किसी ने नहीं पाया वह प्रतिदिन परमधाम में श्री राजजी महाराज के दर्शन करने के लिए जाते हैं।

सो साहेब हांसी करे, अपने मोमिन रूहों सों मिल।
सो सुन के घाव न लागहीं, हाए हाए ऐसे बजर दिल।। ७ ।।

वही श्री राजजी महाराज अपने मोमिन से मिलकर हंसी करते हैं। हाय! हाय! तुम्हारे दिल ऐसे पत्थर बन गए कि इन वचनों को सुनकर भी चोट नहीं लगती।

हांसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन।
पर हाए हाए दिल न विचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने किस तरह की हंसी की है, किसने तुम्हें बेसुध बनाया। हाय! हाय! तुम्हारे ऐसे कठोर दिल में विचार क्यों नहीं आता।

हक का इस्क हमपें, पूरा पाया मैं।
ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के से।। ९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने श्री राजजी महाराज का पूरा इश्क पा लिया है। यह नींद का खेल फरामोशी की बेसुधी में दिखाया है।

इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक।
सुख देखे बेसक अर्स के, तो क्यों न आवे हक इस्क।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना पूरा जागृत बुद्धि का ज्ञान भी दिया जिससे मुझे कोई संशय नहीं रहा। परमधाम के अखंड सुखों को देखा फिर भी राजजी का इश्क क्यों नहीं आता?

सुख में भी सक नहीं, नाहीं अर्स में सक।
ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक।। ११ ।।

परमधाम में भी कोई संशय नहीं रहा, न परमधाम के सुखों में ही कोई संशय रहा। न जागृत बुद्धि के इलम में संशय रहा। न श्री राजजी महाराज हमारे खसम हैं इसमें कोई संशय है।

सक ना रही कछू खेल में, सक ना आए देखन।
सक ना मैं हक की, और सक न गिरो मोमिन।। १२ ।।

खेल में संशय नहीं रहा। खेल देखने के वास्ते आए हैं, इसमें संशय नहीं रहा। मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं, इसमें संशय नहीं है और न मोमिनों की जमात में कोई संशय रहा।

सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर।
सक नहीं कयामत में, सब अरवाहें उठें ज्यों कर।। १३ ।।

अक्षर ब्रह्म में संशय नहीं है और योगमाया में संशय नहीं है। कयामत में संशय नहीं है और आखिरत में रूहें कैसे उठेंगी, इसमें भी संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम।
बेसक तीनों उमत, बेसक घरों पोहोंचावें हम।। १४ ।।

श्री राजजी के हुकम से दुनियां की बहिश्तों को कायमी मिलनी है, इसमें संशय नहीं रहा। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टियों को अपने मूल ठिकानों में पहुंचाएंगे, इसमें भी संशय नहीं रहा।

बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ।
बेसक ताला खोलिया, बेसक कुन्जी हमारे हाथ।। १५ ।।

परमधाम की रूहें फरामोशी में हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा। हम रूहों को श्री राजजी महाराज खेल में आकर मिले, इसमें भी संशय नहीं रहा। तारतम की कुंजी हमारे हाथ में देकर धर्मग्रन्थों के छिपे रहस्य खुलवाए, इसमें संशय नहीं रहा।

बेसक खेल देखाइया, खोली बेसक कतेब वेद।
बेसक हमों ने पाइया, बेसक हक दिल भेद।। १६ ।।

माया का खेल दिखाया इसमें भी संशय नहीं रहा। वेद कतेब के छिपे भेदों को खोल दिया, इसमें भी संशय नहीं रहा। हमने ही श्री राजजी महाराज के दिल के भेद पा लिए हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा।

बेसक दोऊ अर्सों की, जरे जरे की बेसक।
बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक।। १७ ।।

अक्षर धाम, परमधाम और वहां के कण-कण को जान लिया, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों पर बड़ी कृपा की है, इसमें भी संशय नहीं रहा।

जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक।
अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक।। १८ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में जितने भी बड़े लोग हो गए हैं उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि हमारे संशय मिट गए।

सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक बेसक।
मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक।। १९ ।।

अब निश्चित रूप से मैंने जान लिया है कि यह बातें सत हैं। हे मोमिनो! तुम संशय रहित होकर यह बातें समझ लो कि यह 'मैं' (अहं) जो बोल रही है वह श्री राजजी महाराज ही बोल रहे हैं।

केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो विचार।
तो बेसक सुख अर्स का, इन तन बेसक ल्यो करार।। २० ।।

हे मोमिनो! कितने मोमिन ऐसे हैं जो तारतम ज्ञान से निःसन्देह हो गए हैं। अब विचार करके घर के अखण्ड सुख इस मिटने वाले शरीर से ही लेकर चैन प्राप्त कर सकते हो।

दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित।
सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत।। २१ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में कहीं भी कोई संशय रहित नहीं हुआ। अब तारतम ज्ञान से ऐसी बेशकी आई कि सबके संशय मिट गए।

Nijanand App

किस वास्ते हांसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस।
हाए हाए दिल ना विचारहीं, हाए हाए आवत नाहीं माहें होस।। २२ ।।

धनी ने हम रूहों पर किसलिए हंसी की और किसलिए हमें फरामोशी दी? हाय! हाय! दिल में ऐसे विचार आकर मोमिनों की रूह सावचेत क्यों नहीं होती?

ए कदम दिल कछू आवहीं, जब करे विचार दिल ए।
हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, इन हांसी फरामोसी के।। २३ ।।

जब कभी दिल में विचार करती हूं तो श्री राजजी महाराज के चरणों की याद आती है। हाय! हाय! वही समय अब क्यों नहीं रहा जब हमारे पर हंसी करने के लिए फरामोशी दी गई थी।

हाए हाए दिल में न आवहीं, किस वास्ते हांसी भई।
ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही।। २४ ।।

हाय! हाय! यह बात दिल में क्यों नहीं आती कि हमारे ऊपर हंसी किस कारण से हुई और किस कारण से हमें फरामोशी दी गई? यह शब्द दिल खोलकर किसी ने नहीं कहा।

समया न रह्या किन वास्ते, होए पेहेचान न वास्ते किन।
इस्क हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन।। २५ ।।

पहले जैसा समय क्यों नहीं रहा? अब हमें अपने धनी और अखण्ड घर परमधाम की पहचान क्यों नहीं हो रही? हमने अपने धाम धनी के दिल के इश्क को क्यों नहीं पहचाना?

आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत।
तरंग हक इस्क के, हाए हाए दिल में न आवत।। २६ ।।

श्री राजजी फरामोशी देकर ऊपर से जगाते हैं। अब धनी के इश्क की लहरें हमारे दिल में क्यों नहीं आतीं?

खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख।
मेहेर प्रीत हक के दिल की, हाए हाए देखें ना इस्क के सुख।। २७ ।।

यह खेल किस वास्ते बनाया? किस वास्ते दुःख दिखाया है? हमने धनी के दिल में छिपी मेहर (प्रेम और इश्क) के सुखों को क्यों नहीं देखा?

किस वास्ते हलके जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर।
हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इस्क का जोर।। २८ ।।

किस वास्ते धीरे-धीरे जगाते हो और ऊपर से बहुत हल्ला मचाते हो। श्री राजजी महाराज के इश्क की ताकत की सुध कोई क्यों नहीं लेता?

किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फुरमान।
ए बातें हक के इस्क की, हाए हाए करी न काहूं पेहेचान।। २९ ।।

किस कारण से दुनियां इस रहस्य को समझ नहीं सकी और कुरान किस वास्ते भेजा? यह बातें हक के इश्क की हैं, पर हाय! हाय! किसी ने उनको पहचाना नहीं।

Nijanand App

कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को।
मेहेर अल्ला के कलाम, हाए हाए आए ना काहूं दिल मों।। ३० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी श्यामा महारानी किस वास्ते लाए और किस वास्ते वह कुंजी श्री प्राणनाथजी को दी? श्री प्राणनाथजी की मेहर से कुरान के छिपे रहस्य खुले, परन्तु कोई ले न सका।

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम।
हाए हाए ए सुध मोमिनों ना लई, मीठा हक इस्क का आराम।। ३१ ।।

कुरान में लिखा है कि अन्त समय में खुदा खुद आकर कुरान के छिपे भेदों को इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के रूप में खोलेगा। श्री राजजी महाराज का इश्क बड़ा मीठा है और आनन्ददायक है। हाय! हाय! इसकी खबर मोमिनों को क्यों नहीं पड़ी?

ए द्वार किने न खोलिया, ए जो कुरान किताब।
पाई न हकीकत किनहूं, हाए हाए एकै ठौर खिताब।। ३२ ।।

कुरान के छिपे रहस्य आज दिन तक किसी ने नहीं खोले थे। इसमें लिखा है कि केवल एक इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) को ही यह खिताब प्राप्त है और वही आकर इन रहस्यों को खोलेंगे। हाय! हाय! इस हकीकत को आज दिन तक किसी ने नहीं जाना।

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान।
सो साहेदी किन न लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान।। ३३ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा की गवाही खुद खुदा देगा। इस गवाही को किसी ने क्यों नहीं जाना। हाय! हाय! कुरान के इस रहस्य को किसी ने क्यों नहीं समझा?

लिखी इसारतें रमूजें, हकें किन ऊपर।
ए बातें मोमिनों मिनें, हाए हाए छिपी रही क्यों कर।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में इशारतें, रमूजें किसके वास्ते लिखी हैं? हाय! हाय! यह बातें मोमिन के बीच कैसे छिपी रह गयीं?

तरंग हक के इस्क के, पाए ना गिरो में किन।
अजूं माएने मगज, हाए हाए पाए नहीं मोमिन।। ३५ ।।

हाय! हाय! मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के दिल की तरंगों को, अर्थात् कुरान के छिपे रहस्यों को क्यों नहीं पाया है?

हक के दिल का इस्क, निपट बड़ी है बात।
अजूं जाहेर रूहों न हुई, अर्स सूरत हक जात।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में इश्क की बहुत बड़ी बात परमधाम की रूहों के वास्ते ही है। यह बात अभी तक रूहें क्यों नहीं समझ सकीं?

हांसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे।
हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इस्क की ए।। ३७ ।।

फरामोशी देकर हंसी किस वास्ते की है? हाय! हाय! मोमिन इस इश्क की बात को क्यों नहीं समझते?

Nijanand App

लिख्या ऐसा कुरान में, कुंआरी रही फुरकान।
ए दाग गिरो तब देखसी, हाए हाए होसी जब पेहेचान।। ३८ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि कुरान कुंआरी रही, अर्थात् आज दिन तक किसी ने उसके छिपे भेदों को देखा ही नहीं। कुरान के न समझने के कलंक को मोमिन तब समझेंगे जब उन्हें पहचान होगी।

ए भी वास्ते इस्क के, फुरमाया यों कर।
तो कही कुंआरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर।। ३९ ।।

कुरान को कुंआरी इसी वास्ते कहा कि आज दिन तक दुनियां इसको पढ़ती रही और किसी को पहचान नहीं हुई। श्री राजजी महाराज ने अपने इश्क के वास्ते इसे अपनी रूहों के लिए ग्यारहवीं सदी तक छिपा कर रखा। हाय! हाय! मोमिनों ने इस बात का विचार दिल में क्यों नहीं लिया?

उतरे नूर बिलंद से, मोमिन बड़ा मरातब।
हक के दिल का इस्क, हाए हाए मोमिन लेसी कब।। ४० ।।

मोमिन परमधाम से उतर कर खेल में आए। इनका बड़ा ऊंचा दर्जा है। ऐसे श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क को हाय! हाय! यह मोमिन कब लेंगे?

ऐसा नूर-जमाल जो, रूहें रहें इन दरगाह।
ए किस्सा सुनते विचारते, हाए हाए उड़त नहीं अरवाह।। ४१ ।।

ऐसे श्री राजजी महाराज जिनके चरणों में रूहें बैठी हैं, इसके प्रसंग को सुनकर हाय! हाय! मोमिनों की सुरता उड़ क्यों नहीं जाती?

हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह।
हेत प्रीत इस्क की, हाए हाए आई नहीं काहूं एह।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप और उनके दिल का पूर्ण इश्क मोमिनों से है। हाय! हाय! ऐसा प्यार भरा श्री राजजी महाराज का इश्क किसी मोमिन को नहीं आया।

इस्क खेल हांसी इस्क, इस्क फरामोस मोमिन।
इस्कें रसूल होए आइया, वास्ते इस्क न पाया किन।। ४३ ।।

यह खेल इश्क का है। हंसी इश्क की है। फरामोशी मोमिनों को इश्क के वास्ते दी। इश्क के वास्ते ही रसूल आए और इश्क के वास्ते ही इसे कोई समझ नहीं सका।

इस्कें फुरमान आइया, वास्ते इस्क न खुल्या किन।
वास्ते इस्क के गैब हुआ, इस्कें खुले ना खुदा बिन।। ४४ ।।

इश्क के लिए ही कुरान आया। इश्क की हंसी के लिए ही किसी ने आज दिन तक कुरान के भेद नहीं खोले। इश्क के वास्ते ही कुरान छिपा रहा। बिना पारब्रह्म के इश्क के कुरान के रहस्य नहीं खुलते।

इस्कें कुंजी ल्याइया, इस्कें ल्याया खिताब।
इस्कें आए मोमिन, इस्कें खुले ना सिताब।। ४५ ।।

इश्क के वास्ते ही तारतम की कुंजी श्यामा महारानी लाए। इश्क के वास्ते ही इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का खिताब आया। इश्क के वास्ते मोमिन आए और इश्क के लिए ही कुरान के छिपे रहस्य जल्दी नहीं खुल सके।

Nijanand App

कई बानी इस्कें उपजी, कई इस्कें पड़ी पुकार।
ए रूहें भी वास्ते इस्क के, हाए हाए हुइयां न खबरदार।। ४६ ।।

संसार में कई धर्मग्रन्थ इश्क के वास्ते आए और सब इश्क के वास्ते पुकार कर रहे हैं। हाय! हाय! इश्क के वास्ते ही रूहें भी सावचेत नहीं हुईं?

हाए हाए इस्क हक का, समझे नहीं मोमिन।
ना तो अरवाहें थी अर्स की, पर हुआ न दिल रोसन।। ४७ ।।

हाय! हाय! श्री राजजी महाराज के इश्क को मोमिन नहीं समझे। मोमिन तो परमधाम की रूहें थीं, उन्हें भी पहचान नहीं हुई।

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत नाहीं घाए।
सो भी वास्ते इस्क के, जो उड़त नहीं अरवाहे।। ४८ ।।

इश्क के वास्ते ही मोमिनों के दिल में घाव नहीं लगे और इश्क के वास्ते उनकी आत्माओं ने तन नहीं छोड़े।

इस्कें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस।
सो भी वास्ते इस्क के, जो टलत नहीं फरामोस।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ऊपर से इश्क की पुकार करते हैं, फिर भी होश नहीं आता। इश्क के वास्ते ही फरामोशी नहीं हटती।

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत न कलाम सुभान।
सो भी वास्ते इस्क के, जो होत नहीं पेहेचान।। ५० ।।

इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज के वचन चुभते नहीं और इश्क के वास्ते ही उनकी पहचान नहीं हो रही है।

सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचान आवत नाहें।
सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचानत दिल माहें।। ५१ ।।

इश्क के वास्ते ही मोमिनों को पहचान नहीं होती है। इश्क के वास्ते ही दिल में पहचान होती है।

ए करत है सब इस्क, जो खेल में कोई जीतत।
सो भी करत इस्क, जो कोई काहूं भूलत।। ५२ ।।

यह श्री राजजी महाराज के इश्क की लीला है जो हम खेल में जीतते हैं। यह इश्क की ही लीला है कि कोई-कोई मोमिन भूल जाता है।

ए बारीक बातें इस्क की, ए कोई समझत नाहें।
सो भी करत है इस्क, जानत बल जुबांए।। ५३ ।।

इश्क की इन बारीक बातों को कोई समझता नहीं है। यह सब इश्क के वास्ते ही हो रहा है। ऐसा कहने में कितना जोर पड़ता है, यह जबान ही जानती है।

सो भी करत है इस्क, जुदी जुदी जिनस।
काहू सुध थोड़ी काहू घनी, काहू इस्क न देत हरगिस।। ५४ ।।

यह भी सब इश्क से होता है। सब को जुदा-जुदा सुख मिलता है। किसी को इश्क की पहचान कम होती है किसी को ज्यादा और किसी को जरा मात्र भी नहीं होती।

Nijanand App

इस्क सेती हारिए, जितावे इस्क।
इस्कें इस्क न आवहीं, इस्क करे बेसक।।५५।।

इश्क ही हराता है। इश्क ही जिताता है। इश्क से इश्क नहीं आता। इश्क ही सब संशय मिटाता है।

ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए।
इस्क हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए।।५६।।

श्री राजजी महाराज की इन बारीक बातों को कैसे जाना जाए? यह इश्क हक के दिल का है। बिना उनके हुकम के इस इश्क को कैसे समझा जाए?

ए हक देखावें इस्क, तो बेर न पल एक होए।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए।।५७।।

श्री राजजी महाराज इश्क दिखाते हैं तो एक पल नहीं लगता। बिना उनके हुकम के सौ साल सोहबत करो तो भी इश्क नहीं मिलता।

ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए।
बिना इस्क दिए हक के, क्यों कर समझे कोए।।५८।।

यह हक के दिल की बातें बहुत गहरी हैं और श्री राजजी महाराज के इश्क दिए बिना यह समझी नहीं जा सकतीं।

इस्क हक के दिल का, क्यों आवे माहें बूझ।
हक देवें तो इस्क आवहीं, ए हक के इस्क का गुझ।।५९।।

श्री राजजी महाराज के दिल का जो इश्क है, उसे कौन समझ सकता है। जब श्री राजजी महाराज ही इश्क दें तभी इश्क आता है। यह है हक के इश्क का गुह्य (गुझ) रहस्य।

ए हक का बातून इस्क, तिन इस्क का बारीक बातन।
बिना पाए इस्क हक के, इस्क न आवे किन।।६०।।

श्री राजजी महाराज का गुप्त भेद इश्क है। इश्क का रहस्य बहुत गहरा है। श्री राजजी के इश्क मिले बिना इश्क किसी को आता नहीं है।

ए खेल फरामोसीय का, इस्कें किया जो अब।
तुम कायम दायम इस्क में, पर ऐसा इस्क न कब।।६१।।

यह खेल फरामोशी का इश्क ने ही बनाया है। तुम हमेशा अखंड इश्क में ही परमधाम में रहते थे, पर ऐसा इश्क कभी नहीं मिला।

ए हमेसा रूहन में, रहे भीगे बीच इस्क।
पर इस्क ए फरामोसीय का, जो हक के दिल माफक।।६२।।

रूहें हमेशा ही इश्क में भीगी रहती हैं, परन्तु यह फरामोशी का इश्क श्री राजजी ने अपने दिल के माफिक किया है।

बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जुदी होवे गिरो दम।
खेल इस्क जुदागीय का, क्यों देखें अर्स में हम।।६३।।

अखंड परमधाम में एक पल के लिए आत्माएं धनी से अलग नहीं होतीं, तो परमधाम में बैठकर हम जुदाई के खेल का इश्क कैसे देख रहे हैं?

Nijanand App

लेने लज्जत इस्क वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम।
जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इस्क खसम।। ६४ ।।

इश्क की लज्जत लेने के वास्ते ही हुकम ने फरामोशी का खेल बनाया। इस बात को रूहें यदि दिल में विचार लें तो रूहें श्री राजजी के इश्क का आनन्द लें।

आप आगूं रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक।
सुख देने देखाइया, अपने दिल का इस्क।। ६५ ।।

रूहों को अपने चरणों में बैठा करके हमारे दिल में श्री राजजी महाराज ने खेल देखने की चाह दिल में उपजाई और अपने दिल के इश्क का सुख देने के लिए खेल दिखाया।

आप दे फरामोसी, और जगावें भी आप।
देखाई जुदाई फरामोस में, देने इस्क मिलाप।। ६६ ।।

स्वयं ही फरामोशी की नींद देते और स्वयं ही जगाते हैं। फरामोशी में अलग होना दिखाया ताकि दुबारा मिलने पर हकीकत में इश्क क्या है, पता चले।

न मांग्या न दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इस्क सनेह।। ६७ ।।

हमने खेल नहीं मांगा और न हमारे दिल में चाह ही पैदा हुई। यह श्री राजजी के दिल की उपज है जिन्होंने अपने दिल का इश्क दिखाने के लिए जुदाई का खेल मंगवाया।

इस्क तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए।
वास्ते इस्क हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए।। ६८ ।।

इश्क का स्वाद तभी आता है जब बिछुड़ कर मिलें, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपने दिल का इश्क दिखाने के लिए फरामोशी का खेल दिखाया।

इस्क बिछुरे से जानिए, आए दूर थें मिलिए जब।
ए दोऊ बातें अर्स में ना थीं, इस्क चिन्हार देखाई अब।। ६९ ।।

इश्क की पहचान बिछुड़ने से होती है जब दूर से आकर मिलें यह दोनों बातें अर्श में नहीं थीं, अर्थात् एक बिछुड़ना दूसरा दूर जाना। यह दोनों बातें सम्भव न थीं। अब इश्क से इनकी पहचान हो गई।

जो हक का इस्क विचारिए, तो बड़ा दिल देत लज्जत।
ए बुजरक मेहेरबानगी, हकें ऐसी दई न्यामत।। ७० ।।

यदि हक के इश्क का विचार करते हैं तो दिल में बड़ा स्वाद आता है। यह श्री राजजी की बड़ी मेहरबानी है जो धनी ने दूर करके ऐसी न्यामत दी (बिछुड़ने के बाद मिलने की)।

जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इस्क।
जो दिल देय के देखिए, तो सुख आवे हक माफक।। ७१ ।।

जैसे धनी महान हैं, वैसे ही उनका इश्क भी महान है। यदि दिल से विचार करके देखें तो श्री राजजी महाराज के अनुकूल ही सुख मिलेगा।

Nijanand App

जैसा मेहेबूब बुजरक, तैसा हादी हक का तन।
रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन।।७२ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज महान हैं, वैसे ही श्री राजजी, श्यामाजी के परमधाम में तन महान हैं। रूहें श्यामाजी के अंग होने के कारण से उनके समान ही महान हैं। इन सबके समान अखण्ड परमधाम महान है।

ऐसा साहेब इस्क, करत निसबत जान।
हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान।।७३ ।।

रूहों को अपनी अंगना जानकर श्री राजजी महाराज उनसे इस तरह का इश्क करते हैं। हाय! हाय! परमधाम की रूहें खेल में आकर ऐसी भूल गईं कि उन्हें धनी के इश्क की पहचान नहीं होती।

भूले हक और आप को, और भूले बका घर।
हक हंससी इसी बात को, रूहें भूली क्यों कर।।७४ ।।

मोमिन खेल में आकर श्री राजजी महाराज को, अपने आपको और अखण्ड घर को भूल गए। श्री राजजी महाराज इसी बात पर हंसेंगे कि रूहें भूल क्यों गईं?

औलिया लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसबत।
फरामोसी दई हांसीय को, कछू चल्या न हकसों इत।।७५ ।।

यह ही औलिया (मोमिन) श्री राजजी के दोस्त हैं और श्री राजजी की अंगना हैं। श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते इन्हें फरामोशी का खेल दिखाया। यहां खेल में आकर मोमिनों का श्री राजजी के सामने कुछ बल नहीं चला।

कैसे थे इन खेल में, किन माफक थे तुम।
किन से ए निसबत भई, कैसा बका पाया खसम।।७६ ।।

खेल में तुम कैसे थे और कैसी तुम्हारी हालत थी और किससे तुम्हारा सम्बन्ध हुआ, कैसे अखण्ड घर, और धनी मिले?

कहां थे फना के खेल में, कैसा था अर्स घर दूर।
किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर।।७७ ।।

तुम झूठे खेल में कहां थे और तुम्हारा अखण्ड घर कैसा था और कितनी दूर था? दुनियां के महान लोग जिसे नहीं पा सके, तुम्हें किस तरह से श्री राजजी ने अपने चरणों में ले लिया?

कैसा अर्स देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें।
ए जो अरवाहें अर्स की, क्यों अजूं विचारत नाहें।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज ने तुम्हें कैसा परमधाम दिखाया और कैसे मूल-मिलावा में अपने चरणों में ले लिया है? परमधाम की रूहो! तुम अभी तक विचार क्यों नहीं करतीं?

किन सूरत न पाई हक की, न पाया अर्स बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।।७९ ।।

दुनियां में किसी ने भी पारब्रह्म को नहीं देखा और न अखण्ड घर (परमधाम) को ही किसी ने पाया। सभी कहते हैं कि हम खोज-खोजकर थक गए, पर हमें अखण्ड घर नहीं मिला।

Nijanand App

धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर-मकान।
खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान।। ८० ।।

ब्रह्माण्ड के कई देवी-देवताओं ने अक्षरधाम को नहीं पाया। कई अक्षरधाम की खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी ने नहीं देखा।

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम।
सो तले झांकत नूरजमाल के, आवे दीदारें दायम।। ८१ ।।

ऐसे बड़े साहब अक्षर ब्रह्म श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए सदा चांदनी चौक में आते हैं।

कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम।
कौन बड़ाई तुमारी, हाए हाए आवे न याद खसम।। ८२ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारी परमधाम में कैसी महानता है? कैसे अखण्ड परमधाम में तुम रहते हो? तुम्हारी कितनी बड़ी महिमा है? हाय! हाय! तुम्हें अभी भी धनी की याद नहीं आती।

कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी।
किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी।। ८३ ।।

तुम्हारे अखण्ड परमधाम की कितनी बड़ी भारी महिमा है? तुम्हारे धनी किस साहेबी के मालिक हैं? तुम्हारा दर्शन किसने चाहा था (अर्थात् अक्षर ने)? उसकी कितनी बड़ी महानता है?

कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल।
किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल।। ८४ ।।

संसार कैसे पाखण्ड से भरा था? तुम्हारी बुद्धि भी कैसी हो गई थी? तुम कैसे झूठे परिवारों में थे? तुम्हारे कर्म व्यवहार कैसे हो रहे थे?

अब कैसा सहूर है तुम पे, पाई कौन सोहोबत।
किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत।। ८५ ।।

अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से तुम्हें कैसा विवेक मिला है? इस जागृत बुद्धि से तुम किस धनी के चरणों में बैठे हो? पहले संसार में कैसे झूठे कबीले में थे और अब धनी की अंगना हो। अब किस अखण्ड परिवार से सम्बन्ध रखते हो?

कैसी पाई सराफी, कैसी आई तुमें पेहेचान।
हक बका चीन्हया कौन जिमिएं, पाया कैसा इस्क ईमान।। ८६ ।।

तुम तारतम ज्ञान से कैसे पारखी बने हो और कैसी पहचान आई है? किस झूठ की दुनियां में बैठकर कैसे अखण्ड घर (परमधाम) को तथा पारब्रह्म को पहचाना है? उनसे कैसा इश्क और ईमान मिला?

जागत हो के नींद में, विचारत हो के फरामोस।
सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस।। ८७ ।।

तुम जागृत अवस्था में हो या नींद में हो? तुम सावचेत होकर विचार कर पा रहे हो या बेसुध हो? तुम जागकर सीधी बात कर रहे हो? या तुम होश में हो या बेहोशी में हो?

Nijanand App

विचार नींद में तो ना होए, जागे नींद रहे क्यों कर।
विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हांसी दिल धर।। ८८ ।।

अगर नींद में हों तो विचार नहीं आता। अगर जागृत हों तो नींद नहीं रहती। इसको दिल से विचार कर देखो तो बड़ी हैरानी होती है। यही फरामोशी की हंसी है। दिल में विचार कर देखो।

आड़ा ब्रह्मांड देय के, ऐसी जुदागी कर।
करत गुफ्तगोए हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर।। ८९ ।।

तुम्हारे आड़े ब्रह्माण्ड का परदा लगाकर तुम्हें अपने से जुदा कर दिया और फिर उस परदे में से धनी वार्तालाप करते हैं। ऐसा विचित्र जोरावर खेल बनाया।

ना तो बैठे हो कदम तले, पर लागत ऐसे दूर।
हक आप इस्क देखावने, करत आपनसों मजकूर।। ९० ।।

नहीं तो हम श्री राजजी के चरणों तले बैठे हैं और ऐसे लगता है जैसे बहुत दूर हैं। श्री राजजी महाराज अपना इश्क दिखाने के वास्ते ही हमसे बातें करते हैं।

हक का इस्क बढ़या, इस्क अपना जरा नाहें।
जब दई इत बेसकी, तो इस्क क्यों न आवे दिल माहें।। ९१ ।।

हक का इश्क बड़ा है और अपना कुछ भी नहीं है। जब यहां पर उन्होंने संशय मिटा दिए हैं तो अब हमारे दिल में इश्क क्यों नहीं आता?

तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर।
ना कछू रही सो अकल, तो इस्क आवे क्यों कर।। ९२ ।।

हे मोमिनो! आप कहोगे हम तो बेसुधी में हैं और हमारे दिल में जरा भी सुध नहीं है। न बुद्धि ही है, तो इश्क किस तरह से आवे?

ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुफ्तगोए।
ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए।। ९३ ।।

हमें न अपनी सुध है न घर की, न श्री राजजी महाराज की और न वहां के वार्तालाप की। हम तो जिन्दा ही मर गए। ऐसे में जागृत होने के लिए बल कहां से आए?

आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम।
बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम।। ९४ ।।

हे मोमिनों! तुम निश्चित अपने आपको, धनी को, अपने घर को और बुद्धि को भूल गए, परन्तु श्री राजजी महाराज ने तुम्हें सब संशय मिटा देने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) दिया है।

मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक।
सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक।। ९५ ।।

इस संसार में आकर बेशक हम मर भी गए और जिन्दा भी हो गए, पर धनी ने हमको विवेक भी दिया और जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भी दिया।

Nijanand App

तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार।। ९६ ।।

जब हमने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान प्राप्त कर लिया, तो हम सावचेत हो गए। श्री राजजी ने ऐसी बेशकी दी कि अब किसी प्रकार का कोई संशय रहा ही नहीं।

इनहीं बात की हांसी है, उड़त ना फरामोस।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस।। ९७ ।।

अब इसी बात की हंसी है कि फरामोशी की नींद क्यों नहीं उड़ती? नहीं तो जब बेशक हो गए तो हाय! हाय! हे मोमिनो! फिर भी तुम्हें होश नहीं आता!

ऐही हांसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्कें करी जो इत।। ९८ ।।

हंसी इस बात की है कि फरामोशी में भी जाग रहे हैं। धनी के इस इश्क ने हमारी ऐसी हालत कर दी है कि जाग जाने में भी अब कोई संशय नहीं, अर्थात् परमधाम में फरामोशी और खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हैं।

बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक।
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क।। ९९ ।।

बेशक हम परमधाम में बैठे हैं और बेशक हम तारतम वाणी से यहां जागृत हो गए। हंसी भी बेशक हुई, क्योंकि इश्क नहीं आया।

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।। १०० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारे ऊपर जो खेल में पल-पल बीत रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज का इश्क ही है जो हर पल तुम्हारे ऊपर मेहर बरसा रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७०५ ॥

बुलाए ल्याओ तुम रूहअल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।। १ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी आशिक कहलाने वाली रूहों को जो खेल में हैं, उनको बुलाकर लाओ। उन्होंने परमधाम में इश्क का रब्द किया था (उनको इश्क की पहचान हो गई होगी)। उन्हें याद कराना कि श्री राजजी महाराज बुला रहे हैं।

रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानीजी से घर (परमधाम) की यही बातें कीं कि रूहें खेल में आईं हैं, उन्हें बुला लाओ।

Nijanand App